ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन

प्रियंका कुमारी[1] & डॉ. विजय कुमार गुप्ता[2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत, नामांकन संख्या- २२५०१००८७१.

[2] शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत, नामांकन संख्या- २२५०१००८७१.

How to Cite the Article: प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i6.2026.423-434

Keywords

ई-लर्निंग की उपयोगिता, डिजिटल शिक्षा, प्रभावशाली शिक्षण, ई-लर्निंग संबंधी चुनौतियाँ।

Abstract

सीखना व्यवहार में परिवर्तन है। व्यक्ति जन्म के उपरांत अपने आसपास के वातावरण, समाज एवं पारिवारिक परिवेश में रहकर कुछ न कुछ सीखता रहता है। जैसे-जैसे व्यक्ति नए-नए गुणों एवं व्यवहारों को सीखता जाता है, उसके व्यवहार में भी परिवर्तन आता जाता है। व्यक्ति दिन-प्रतिदिन कुछ न कुछ अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों का संगठन ही सीखना कहलाता है।

वर्तमान समय में सीखने की प्रक्रिया में काफी बदलाव हुए हैं। वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा सीखने की प्रक्रिया को काफी प्रभावित करती है। स्कूलों एवं कॉलेजों में ई-लर्निंग द्वारा अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है, जिसमें कई डिजिटल तकनीक एवं माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के ऐप का प्रयोग किया जाता है, जिसे कंप्यूटर, मोबाइल फोन, प्रोजेक्टर आदि के माध्यम से छात्रों तक पहुँचाया जाता है।

इन डिजिटल तकनीकों के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली एवं सहज बनाया

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

	जाता है, जो शिक्षक-छात्र अंतःक्रिया को और अधिक मजबूत एवं प्रभावशाली बनाने में मदद करती है। ई-अधिगम शिक्षा व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में मदद करती है तथा शिक्षा में लचीलापन भी लाती है। यह शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों को भी नवीन शिक्षण विधि द्वारा अध्ययन करने एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान करने में मदद करती है। परंतु लाभ के साथ-साथ कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। बिजली, इंटरनेट असुविधा, उचित उपकरणों का अभाव, तकनीकी ज्ञान की कमी एवं योग्य शिक्षकों के अभाव में ई-लर्निंग में कई बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। इन रुकावटों एवं बाधाओं को दूर करना बहुत बड़ी चुनौती है। इंटरनेट एवं उपकरण की समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार द्वारा कई कार्यक्रम चलाए गए हैं, जिन्हें चैनलों के माध्यम से टीवी पर निश्चित समय में प्रसारित किया जाता है, जिससे वंचित छात्र अपनी सुविधा अनुसार इसका पूरा लाभ उठा सकते हैं।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में औपचारिक शिक्षा प्रणाली में ई-लर्निंग का प्रयोग बढ़-चढ़कर किया जा रहा है। उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ई-लर्निंग का प्रयोग अत्यधिक किया जाता है तथा छात्रों के लिए यह उपयोगी भी सिद्ध हुआ है, क्योंकि इसकी सहायता से छात्र कम समय में अधिक एवं सटीक जानकारी हासिल कर सकते हैं।

शिक्षा मनुष्य को सदैव सीखने के लिए प्रेरित करती है। मनुष्य प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से सीखता रहता है। यह सीखना व्यक्ति में होने वाले बदलाव का कारण बनता है। एक प्रशिक्षित व्यक्ति स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी शिक्षित करने का प्रयास करता है। साथ ही अपने परिवेश एवं समाज में बदलाव लाने में अहम भूमिका अदा करता है।

बदलते समय के साथ-साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदलता जा रहा है तथा शिक्षा के आदान-प्रदान के तरीकों में भी बदलाव आता जा रहा है। प्राचीन समय में केवल परंपरागत शिक्षण विधियाँ जैसे व्याख्यान विधि, आगमन-निगमन विधि, समस्या-समाधान विधि का प्रयोग किया जाता था। परंतु वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों का प्रयोग कर शिक्षा प्रदान की जा रही है।

डिजिटल शिक्षा में स्मार्ट बोर्ड, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, मोबाइल फोन आदि का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है, जिसके कारण शिक्षण विधियों में भी बदलाव आया है, जो शिक्षक को प्रभावशाली बनाने में मदद करती हैं।

ई-लर्निंग विद्यार्थियों को अपने

समय, गति, क्षमता एवं योग्यता आदि के अनुसार सीखने एवं विषय-वस्तु को समझने का अवसर प्रदान करती है। ई-लर्निंग छात्रों को, विशेष रूप से उच्च स्तर के विद्यार्थियों को, कम समय में अधिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है। ई-लर्निंग द्वारा अधिगम छात्रों को विषयगत ज्ञान तो प्रदान करती ही है, साथ ही उनमें तकनीकी कौशलों का भी विकास करती है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता **(2026).** उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन**.** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

ई-लर्निंग छात्रों को बार-बार अभ्यास करने तथा स्वयं मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे छात्र अपनी शैक्षिक स्थिति को भली-भाँति जानकर उसमें सुधार ला सकते हैं। छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा सुविधा प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा कई चैनल चलाए जाते हैं, जिसमें शिक्षण संबंधी कार्यक्रम 24 घंटे, 7 दिन चलाए जाते हैं, जिसका लाभ छात्र अपनी आवश्यकता अनुसार उठा सकते हैं। उदाहरण—स्वयं प्रभा, पीएम ई-विद्या, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म हैं, जिनका प्रयोग छात्र आसानी से कर सकते हैं।

उद्देश्य

- उच्च स्तर के विद्यार्थियों को ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं महत्त्व के बारे में बताना।
- ई-लर्निंग द्वारा अध्ययन के दौरान आने वाली बाधाओं एवं चुनौतियों से अवगत कराना।
- उच्च स्तर के विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के प्रति जागरूक करना, ताकि वे इसका उचित एवं अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।
- छात्रों को नवीन शिक्षण पद्धतियों एवं तकनीकी ज्ञान से अवगत कराना।

ई-लर्निंग का अर्थ

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव देखे गए हैं, जिसमें सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का काफी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन समय से चली आ रही परंपरागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों द्वारा विभिन्न शिक्षण सामग्रियों जैसे पाठ्य-पुस्तक, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर आदि का प्रयोग अध्ययन-अध्यापन के लिए किया जाता था। परंतु वर्तमान समय में अध्ययन-अध्यापन में कई बदलाव आ गए हैं, जिसमें शिक्षक सामग्रियों के रूप में कई इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग किया जाने लगा है।

पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ कई लर्निंग ऐप का प्रयोग किया जाने लगा है, जिसके माध्यम से छात्र वीडियो लेक्चर के माध्यम से अध्ययन कर सकते हैं। इसके अलावा श्यामपट्ट के स्थान पर स्मार्ट बोर्ड का प्रयोग किया जाने लगा है तथा चॉक के स्थान पर कई प्रकार के मार्कर पेन का प्रयोग किया जाने लगा है। विशेष रूप से कोरोना के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए किए गए लॉकडाउन से शिक्षा पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, जिसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ता गया।

ई-लर्निंग से तात्पर्य है इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग करके अधिगम करना, अर्थात् अधिगम प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट बोर्ड, स्मार्टफोन आदि का प्रयोग। इससे अधिगम प्रक्रिया को सरल, स्पष्ट और प्रभावी बनाने में सुविधा पहुँचती है तथा छात्रों को अधिगम में सुगमता प्रदान होती है।

ई-अधिगम में सूचना एवं संचार के साधनों के रूप में कंप्यूटर, मोबाइल फोन, स्मार्ट बोर्ड आदि तथा संचार के रूप में इंटरनेट, बिजली, वेबसाइट आदि आते हैं। इन माध्यमों का प्रयोग जब एक साथ शिक्षा व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने एवं

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता **(2026).** उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन**.** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

शिक्षा ग्रहण करने के लिए किया जाता है तो उसे ई-अधिगम या ई-लर्निंग कहते हैं। इसका प्रयोग व्यक्ति या छात्रों द्वारा किसी भी समय, किसी भी स्थान पर औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों रूपों में किया जा सकता है।

ई-अधिगम के विस्तार हेतु सरकार द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रम

ई-अधिगम को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई सरकारी कार्यक्रम, शिक्षण प्लेटफॉर्म एवं योजनाएँ शुरू की गई हैं, जो शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देने के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों तथा दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों को भी इस शिक्षण व्यवस्था का लाभ उठाने में सहायता प्रदान करते हैं।

ई-अधिगम के विस्तार हेतु सरकार द्वारा चलाए जाने वाले प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—1. **स्वयं (**SWAYAM)

स्वयं भारत सरकार द्वारा संचालित एक राष्ट्रीय ऑनलाइन शिक्षा मंच है, जिसे वर्ष 2017 में प्रारंभ किया गया था। **SWAYAM** का पूरा अर्थ **"Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds"** है। इसका उद्देश्य भारत में डिजिटल शिक्षा का विकास एवं विस्तार करना तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना है।

इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की सहायता से उन विद्यार्थियों तक शिक्षा की सुविधा पहुँचाने का प्रयास किया जाता है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन आर्थिक कठिनाइयों अथवा शैक्षणिक संस्थानों तक पहुँच न होने के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। स्वयं के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर सकते हैं।

स्वयं का विकास शिक्षा मंत्रालय द्वारा **UGC, NCERT, NPTEL** एवं **IGNOU** के सहयोग से किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के सभी क्षेत्रों तक सार्वभौमिक रूप से डिजिटल एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाना है।

स्वयं एक ऐसी ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली है, जिसमें अनेक पाठ्यक्रम शामिल किए गए हैं। विशेष रूप से उच्च शिक्षा से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रम इसमें उपलब्ध हैं। इसकी सहायता से वे विद्यार्थी भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, जो आर्थिक स्थिति अथवा शैक्षणिक संस्थानों तक पहुँच की कमी के कारण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

इसमें विशेष रूप से डिजिटल एवं तकनीकी शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। यह सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है, चाहे वे किसी भी वर्ग, समाज, परिवेश, क्षेत्र अथवा पृष्ठभूमि से संबंधित हों। यह विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ कार्य-कुशलता विकसित करने में भी सहायता करता है तथा उन्हें संबंधित विषय में दक्ष बनाकर रोजगार के अवसर प्राप्त करने में सहायक होता है।

स्वयं के अंतर्गत विभिन्न स्तरों की शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं—

- विद्यालयी शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम **NCERT** द्वारा संचालित किए जाते हैं।
- स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम **UGC** द्वारा संचालित किए जाते हैं।
- इंजीनियरिंग एवं तकनीकी शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम **NPTEL** द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

- व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आधारित पाठ्यक्रम **IGNOU** द्वारा संचालित किए जाते हैं।

स्वयं का मुख्य लक्ष्य एवं उद्देश्य है—कहीं भी, किसी भी समय और सभी के लिए शिक्षा प्रदान करना। अर्थात् डिजिटल माध्यम से संपूर्ण देश के विद्यार्थियों को सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।

इस प्रकार, स्वयं भारत में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने, शिक्षा के अवसरों में समानता स्थापित करने तथा विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

स्वयं प्रभा

स्वयं प्रभा एक **DTH (Direct-to-Home)** आधारित शैक्षिक सेवा है, जिसके अंतर्गत शैक्षिक टीवी चैनलों के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इन चैनलों पर विभिन्न पाठ्यक्रमों से संबंधित वीडियो व्याख्यान, पाठ्य-सामग्री तथा शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम उपलब्ध कराए जाते हैं। इनमें विद्यालयी शिक्षा, महाविद्यालयीन शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित सामग्री शामिल होती है।

इन कार्यक्रमों के संचालन एवं शैक्षिक सामग्री के निर्माण में **IIT, IGNOU, UGC, NCERT** तथा **NPTEL** जैसी विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका रहती है। स्वयं प्रभा का प्रमुख उद्देश्य मुक्त, खुली एवं दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देना तथा विद्यार्थियों को घर बैठे गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराना है।

स्वयं प्रभा के अंतर्गत कक्षा 1 से 12 तक की विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा के स्तर पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। विज्ञान, वाणिज्य, कला, प्रबंधन, इंजीनियरिंग आदि विभिन्न विषयों से संबंधित पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा तथा प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित कार्यक्रम एवं शिक्षण सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है।

इस प्रकार, स्वयं प्रभा विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराती है। विद्यार्थी घर बैठे इन सुविधाओं का लाभ उठाकर अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं तथा अपने ज्ञान एवं कौशल का विकास कर सकते हैं।

नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया

NDLI का पूरा नाम **National Digital Library of India** (नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया) है। यह भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण डिजिटल शैक्षिक पहल है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं को ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना है।

यह एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी, शिक्षक एवं शोधार्थी विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्री का लाभ उठा सकते हैं। इसमें पुस्तकें, वीडियो व्याख्यान, ऑडियो व्याख्यान, जर्नल, शोध-पत्र तथा अन्य अध्ययन सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध होती है। इसका लाभ विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा एवं शोध के स्तर तक लिया जा सकता है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता **(2026).** उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन**.** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

इसका विकास भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर द्वारा किया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य विभिन्न विषयों एवं भाषाओं में ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना तथा सभी विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करना है। विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से इसका उपयोग अपनी आवश्यकता एवं सुविधा के अनुसार कर सकते हैं।

पीएम ई-विद्या

पीएम ई-विद्या भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक समावेशी डिजिटल शिक्षा पहल है, जिसे शिक्षा मंत्रालय द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत वर्ष 2020 में प्रारंभ किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को समग्र एवं गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराना है।

पीएम ई-विद्या के अंतर्गत **DIKSHA, SWAYAM, SWAYAM PRABHA, e-Pathshala, National Digital Library** आदि विभिन्न डिजिटल शिक्षा संसाधनों को एक व्यापक व्यवस्था के रूप में उपलब्ध कराया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री तक पहुँच प्रदान करना है।

विद्यार्थी वीडियो व्याख्यान, टेलीविजन के माध्यम से प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रम, इंटरनेट, मोबाइल, वेबसाइट एवं ऐप आदि के माध्यम से अध्ययन कर सकते हैं। यह सुविधा विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न करती है।

विशेष रूप से वे विद्यार्थी, जो किसी कारणवश शिक्षा से वंचित रह जाते हैं या दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने के कारण शैक्षणिक संस्थानों तक आसानी से नहीं पहुँच पाते, इस प्रकार की डिजिटल शिक्षा व्यवस्था से लाभान्वित हो सकते हैं। वे कम समय एवं कम लागत में घर बैठे अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं तथा ज्ञान एवं कौशल का विकास कर सकते हैं।

दीक्षा (DIKSHA)

DIKSHA का पूरा नाम **Digital Infrastructure for Knowledge Sharing** है। यह भारत सरकार द्वारा संचालित एक डिजिटल शिक्षा मंच है, जिसे शिक्षा मंत्रालय एवं **NCERT** के सहयोग से वर्ष 2017 में प्रारंभ किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा के विकास एवं विस्तार में डिजिटल तकनीक का प्रभावी उपयोग करना है।

DIKSHA के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने तथा नवीन शिक्षण पद्धतियों को अपनाने का प्रयास किया गया है। पारंपरिक शिक्षण प्रणाली में डिजिटल तकनीक का समावेश करके वीडियो व्याख्यान, **PPT** प्रस्तुतीकरण, एनीमेशन, स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर आदि आधुनिक तकनीकों के प्रयोग पर बल दिया गया है।

शिक्षकों को डिजिटल तकनीक के प्रयोग के लिए प्रशिक्षित करने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाते हैं। इससे शिक्षक तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर अपनी शिक्षण-पद्धति को अधिक प्रभावी एवं आधुनिक बना सकते हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

DIKSHA के माध्यम से विद्यार्थी इंटरैक्टिव लर्निंग, गतिविधि-आधारित शिक्षण, खोज-आधारित शिक्षण, क्विज एवं असाइनमेंट जैसी गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। इस प्रकार की शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों में एकाग्रता, सक्रिय सहभागिता एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास करने में सहायक होती है।

विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता

1. **अधिगम संबंधी सुविधा**

ई-लर्निंग की सहायता से शिक्षा प्रदान करना काफी आसान हो जाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी कहीं भी और कभी भी अपनी सुविधा के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ई-लर्निंग शिक्षा में लचीलापन प्रदान करती है, जिससे विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्राप्त करना आसान हो जाता है।

2. **अधिगम की गति को नियंत्रित करने में सहायक**

ई-लर्निंग में रिकॉर्ड किए गए वीडियो व्याख्यान, ई-पुस्तकें, नोट्स आदि सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं। विद्यार्थी वीडियो व्याख्यान को अपनी आवश्यकता के अनुसार बार-बार देखकर कठिन विषयों को आसानी से समझ सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपनी सीखने की गति को स्वयं नियंत्रित कर सकते हैं और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ती है।

3. **कम लागत में शिक्षा की सुविधा**

ई-लर्निंग विद्यार्थियों को घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है। इससे शैक्षणिक संस्थान तक आने-जाने, आवास, पुस्तकों तथा अन्य शैक्षिक सामग्री पर होने वाले खर्च को कम किया जा सकता है। इस प्रकार विद्यार्थी अपेक्षाकृत कम लागत में अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

4. **नवीन शिक्षण तकनीक एवं शिक्षण सामग्री का उपयोग**

ई-लर्निंग अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से होने वाले अधिगम में इंटरनेट एवं डिजिटल उपकरणों की सहायता से शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इसके माध्यम से विद्यार्थी नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा समय के साथ होने वाले परिवर्तनों से स्वयं को जोड़ सकते हैं।

वीडियो, एनीमेशन, डिजिटल प्रस्तुतीकरण तथा अन्य मल्टीमीडिया संसाधनों का उपयोग शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाता है।

5. **प्रभावी शिक्षक-छात्र अंतःक्रिया**

शिक्षक-छात्र अंतःक्रिया का अर्थ है शिक्षक द्वारा शिक्षण सामग्री एवं पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों तक पहुँचाना तथा विद्यार्थियों द्वारा उसे ग्रहण करना और अपनी जिज्ञासाओं एवं समस्याओं के संबंध में प्रश्न पूछना।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

ई-लर्निंग विभिन्न डिजिटल माध्यमों के द्वारा इस अंतःक्रिया को सरल एवं रोचक बनाने में सहायता करती है तथा विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करती है।

6. **विविध विषयों एवं पाठ्यक्रमों से संबंधित सामग्री की उपलब्धता**

ई-लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थी इंटरनेट पर विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न ऑनलाइन एप, वेबसाइट एवं पाठ्यक्रम उपलब्ध होने के कारण विद्यार्थी एक ही समय में अनेक विषयों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं।

7. **स्व-मूल्यांकन में सहायक**

ई-लर्निंग विद्यार्थियों को स्व-अधिगम के साथ-साथ स्व-मूल्यांकन का अवसर भी प्रदान करती है। विद्यार्थी ऑनलाइन क्विज, प्रोजेक्ट, असाइनमेंट एवं टेस्ट आदि के माध्यम से अपने अधिगम का मूल्यांकन कर सकते हैं।

इससे विद्यार्थी अपनी शैक्षिक स्थिति को समझ सकते हैं तथा आवश्यकता के अनुसार अपनी अध्ययन प्रक्रिया में सुधार कर सकते हैं।

ई-लर्निंग में आने वाली चुनौतियाँ

1. **तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव**

ई-लर्निंग के प्रभावी उपयोग के लिए तकनीकी ज्ञान आवश्यक है। कंप्यूटर, स्मार्ट बोर्ड, स्मार्टफोन एवं इंटरनेट जैसे उपकरणों का उपयोग करने के लिए उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अतः प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव ई-लर्निंग के विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

2. **शिक्षक-छात्र अंतःक्रिया में कमी**

ऑनलाइन शिक्षा के दौरान शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच प्रत्यक्ष अंतःक्रिया अपेक्षाकृत कम हो सकती है। इससे शिक्षक विद्यार्थियों से भावनात्मक रूप से जुड़ने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं तथा विद्यार्थी भी अपनी समस्याएँ या प्रश्न पूछने में संकोच कर सकते हैं।

3. **एकाग्रता में कमी**

ई-लर्निंग में लंबे समय तक स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करके अध्ययन करना कठिन हो सकता है। मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से अध्ययन करने के लिए शांत एवं एकाग्र वातावरण की आवश्यकता होती है। उचित वातावरण के अभाव में विद्यार्थियों की एकाग्रता प्रभावित हो सकती है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

4. **मूल्यांकन एवं वास्तविक निष्पादन जानने में कठिनाई**

ऑनलाइन परीक्षाओं में नकल अथवा अनुचित साधनों के प्रयोग की संभावना रहती है। इससे विद्यार्थियों की वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रदर्शन का सही मूल्यांकन करना कठिन हो सकता है।

5. **स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ**

लंबे समय तक स्क्रीन देखने तथा एक ही स्थान पर बैठे रहने से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आँखों में तनाव, सिरदर्द, गर्दन एवं पीठ में दर्द जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

6. **अभिप्रेरणा एवं मार्गदर्शन में कमी**

ई-लर्निंग में प्रत्यक्ष शिक्षक-छात्र संपर्क कम होने के कारण विद्यार्थियों को निरंतर प्रेरणा एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। इससे विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति प्रेरणा एवं नियमितता प्रभावित हो सकती है।

7. **गुणवत्तापूर्ण सामग्री का चयन**

ऑनलाइन माध्यम में अनेक प्रकार की शिक्षण सामग्री उपलब्ध होती है। विद्यार्थियों के लिए विश्वसनीय, नवीन एवं गुणवत्तापूर्ण सामग्री का चयन करना कभी-कभी कठिन हो जाता है। पुराने अथवा गलत स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने पर विद्यार्थियों को गलत ज्ञान भी मिल सकता है। इसलिए गुणवत्तापूर्ण एवं प्रमाणिक शिक्षण सामग्री का चयन एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

परिणाम

ई-लर्निंग के अध्ययन एवं विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम सामने आते हैं—

1. ई-लर्निंग ने विद्यार्थियों को नवीन शिक्षा के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ सामाजिक विकास एवं राष्ट्र कल्याण में भी उपयोगी भूमिका निभाई है।
2. ई-लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर मिले हैं।
3. विद्यार्थियों को नवीन शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से अध्ययन करने का अवसर मिला है, जिससे उनमें शिक्षा के प्रति नवीन दृष्टिकोण विकसित हुआ है।
4. विद्यार्थियों को नवीन कौशल एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला है।
5. ई-लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थी भविष्य में होने वाले परिवर्तनों एवं चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकते हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

निष्कर्ष

वर्तमान समय डिजिटलाइजेशन की ओर तेजी से बढ़ रहा है। शिक्षा मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। अतः शिक्षा में नवीन दृष्टिकोण एवं आधुनिक तकनीकों का समावेश आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक का प्रवेश शिक्षा व्यवस्था को अधिक आधुनिक, प्रभावी एवं सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ई-लर्निंग के माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायता करता है। इसके साथ-साथ यह विद्यार्थियों में मानसिक, भावनात्मक, नैतिक एवं मनोसामाजिक गुणों के विकास तथा आत्मविश्वास के निर्माण में भी सहायक हो सकता है।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में ई-लर्निंग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी तथा शिक्षा से वंचित विद्यार्थी भी इसका उचित लाभ उठा सकें।

सुझाव

1. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ई-लर्निंग द्वारा अध्ययन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न हो और वे डिजिटल संसाधनों का उचित उपयोग कर सकें।
2. विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों से अवगत कराया जाना चाहिए, जिससे वे इसका दुरुपयोग न करके इसे अपने अध्ययन को बेहतर बनाने के साधन के रूप में प्रयोग कर सकें।
3. वर्तमान समय में शिक्षण-अधिगम में ई-लर्निंग का प्रयोग बढ़ रहा है। इसलिए योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति के साथ-साथ कार्यरत शिक्षकों को समय-समय पर तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
4. ई-लर्निंग से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं, लेकिन बिजली की समस्या, उपकरणों का अभाव तथा तकनीकी ज्ञान की कमी जैसी बाधाएँ भी मौजूद हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए।
5. विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के माध्यम से अध्ययन के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए, ताकि वे डिजिटल शिक्षा का उचित उपयोग कर बदलते समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता (2026). उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

संदर्भ ग्रंथ सूची: (REFERENCES)

1. पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. शर्मा, आर. ए. (2007). शिक्षा अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. शर्मा, आर. ए. (2006). शिक्षा तकनीकी. कमल बुक डिपो, मेरठ।
4. वेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (2006). रिसर्च इन एजुकेशन. प्रिंटिंग हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
5. मीणा एवं सहाय, प्रहलाद. (2024). माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में ऑनलाइन शिक्षा की उपयोगिता एवं उसके नैतिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका, 10, 2454-308।
6. छाबड़ा, रुचि. (2024). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई-लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. **International Journal of Creative Research Thoughts, 12, 2320-2882।**
7. यादव, कुमार महेंद्र एवं सिंह, डॉ. रश्मि. (2024). स्नातक स्तर के सामान्य, पिछड़े एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों पर ई-अधिगम के प्रभाव का अध्ययन. आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका, 17, 2347-2944।
8. मिश्रा, आशीष एवं चौहान, संगीता. (2023). महिला सशक्तीकरण पर डिजिटलीकरण का प्रभाव. **International Journal for Multidisciplinary Research, 5, 2582-2160।**
9. मिश्रा, आर. एस. एवं गौतम, कुमार सानंद. (2023). शिक्षण में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का महत्त्व. **International Journal of Creative Research Thoughts, 11, 2320-2882।**
10. भाटिया, रुचि. (2023). भारत में ई-संसाधन और उच्च शिक्षा का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. **Multidisciplinary Research Journal, 06, 2581-6918।**
11. चौधरी, गुलाब. (2023). डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन. **International Journal of Novel Research and Development, 8, 2456-4184।**
12. मिश्रा, डॉ. सीतेश्वरी. (2022). भूमंडलीय समय में ई-लर्निंग का उच्च शिक्षा पर प्रभाव के संबंध में शोध अध्ययन. **International Journal of Research, 04, 2348-795।**
13. गौतम, डॉ. वर्षा. (2021). रीवा विकासखंड के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में कोविड-19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियों पर समीक्षात्मक अध्ययन. **International Journal of Applied Research, 8(1), 2394-7500।**

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका कुमारी & विजय कुमार गुप्ता **(2026).** उच्च स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ई-लर्निंग की उपयोगिता एवं चुनौतियों पर अध्ययन**.** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(6),423-434.

14. चौधरी, गुलाब. (2021). डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन. **International Journal of Education, 2, 2231-3613।**

15. सिंह, कुमार अरविंद. (2019). सोशल मीडिया का वर्तमान परिदृश्य, उपयोगिता एवं प्रभाव : एक अनुशीलन. **A Referred Research Journal and a Complete Periodical Dedicated to Humanities and Social Science Research, 10, 0975-1254।**

16. कुमार, संदीप एवं गुप्ता, मोनिका. (2020). नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा, ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा. **A Half-Year Refereed and Peer-Reviewed International Journal of Education,1,2583-4754**

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License